डॉ० संगीता राय
अतिथि शिक्षक
संस्कृत विभाग
~~जैन~~ एच० डी० जैन कॉलेज, आरा।

भाषा की परिभाषा →

वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्त्तते,
ददमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते॥

अर्थात् भाषा की कृपा से ही संसार की यात्रा चलती है। वह दिव्य ज्योति = भाषा ही सम्पूर्ण संसार में अपना प्रकाश फैलाये हुए है। यदि भाषा रूपी यह दिव्य ज्योति नहीं होती तो सारा संसार अन्धकारमय होता।

भाषा मानव जीवन का अनिवार्य साधन है अतः उसका मानव जीवन से घनिष्ठ संबंध है। मनुष्य अपने हृदयस्थ विचारों को भाषा के माध्यम से ही अन्य व्यक्ति तक पहुँचाता है। विचारों तथा भावों को अन्य व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए यद्यपि अन्य साधन भी प्रयोक्तव्य है। यथा मूक-बधिर मनुष्य हाथों के संकेतों के द्वारा अपने भावों तथा विचारों को प्रकट करता है। गार्ड भी लाल या हरी झंडी के माध्यम से ट्रेन को रोकने एवं चलने की संस्तुति प्रदान करता है आदि। पशु-पक्षी भी अपनी भाषा के द्वारा अपने विचारों को परस्पर प्रकट करते हैं। परन्तु यहाँ पर प्रयोजन भाषा के व्यापक अर्थ से न होकर मानव के द्वारा प्रयुक्त सार्थक वाणी से है जिसके माध्यम से वह अपने भावों एवं विचारों को प्रकट कर सके। इसमें न तो ~~एवं~~ मानवेतर प्राणियों की भाषा का अध्ययन करते हैं और नहीं मनुष्य के

सांकेतिक व्यवहारों का अपितु भाषा-विज्ञान में ~~हम~~ केवल मौखिक भाषा, मानव कण्ठ से निःसृत यौक्तिक भाषा तथा ऐसी ध्वनियों का जिनके द्वारा एक मनुष्य अन्य मनुष्य पर अपने विचारों को प्रकट करता है, अध्ययन करते हैं। इसमें वे ध्वनियाँ अभिप्रेत हैं जिनमें आकांक्षा, योग्यता तथा सन्निधि विद्यमान हो। अतः भाषा विज्ञान की दृष्टि से भाषा की परिभाषा इस प्रकार करते हैं सकते हैं— 'जिन यादृच्छिक तथा विभिन्न अर्थों में रूढ़ ध्वनि संकेतों के द्वारा मनुष्य अपने भावों विचारों को अभिव्यक्त करता है, उन्हें भाषा कहते हैं'। विद्वानों ने भाषा की अनेक परिभाषाएँ दी हैं—

> डॉ० पी० डी० गुणे के अनुसार - भाषा का व्यापकतम रूप में अर्थ है कि हमारे विचारों और मनोभावों को व्यक्त करने वाले ऐसे संकेतों का कुल योग जो देखे या सुने जा सकें और जो इच्छानुसार उत्पन्न किये एवं दुहराये जा सकें। Language in its widest sense means, therefore the sum total of such signs of our thoughts and feelings as are capable of external perception and as could be produced and repeated at will.

> A.H Gardiner के अनुसार - विचारों की अभिव्यक्ति के लिए व्यक्त ध्वनि संकेत ही भाषा है। The common definition of speech is the use of articulate sound symbols for the expression of thought

⇒ Henry Sweet के अनुसार — भाषा को व्यक्त ध्वनि संकेतों द्वारा मानव विचारों की अभिव्यक्ति है। Language may be defined as the expression of thought by means of speech sounds.

भारतीय विद्वानों ने भी भाषा की अनेकों परिभाषाएँ की है वे निम्नलिखित है —

→ डॉ॰ मंगलदेव के अनुसार - भाषा मानवों की उस चेष्टा या व्यापार को कहते हैं, जिससे मनुष्य अपने उच्चारणोपयोगी शरीरावयवों से उच्चारण किये गए वर्णनात्मक या व्यक्त शब्दों के द्वारा अपने विचारों को प्रकट करते हैं।

⇒ डॉ॰ श्यामसुन्दर दास के अनुसार — विचारों की अभिव्यक्ति के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों के व्यवहार को भाषा कहते हैं।

⇒ डॉ॰ भोलानाथ तिवारी के अनुसार - भाषा उच्चारणावयवों से उच्चरित अध्ययन- विश्लेषणीय यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा एक समाज के लोग आपस में भावों और विचारों का आदान प्रदान करते हैं।

⇒ डॉ॰ बाबूराम सक्सेना के अनुसार - जिन ध्वनि चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार विनिमय करता है, उसके समष्टि रूप को भाषा कहते हैं।

—×—